पारिवारिक शिक्षण संसाधन

shepherds
GLOBAL CLASSROOM

Shepherds Global Classroom का अस्तित्व इस पूरे संसार में उभरते हुए मसीही अगुवों के लिए एक पाठ्यक्रम प्रदान करके यीशु मसीह की देह को तैयार करने के लिए है। हमारा लक्ष्य संसार के हर देश में आत्मिक प्रशिक्षकों के हाथों में 20-पाठ्यक्रम पाठ्यक्रम उपकरण को देकर स्वदेशी प्रशिक्षण कार्यक्रमों की संख्या को बढ़ाना है।

यह पुस्तक https://www.shepherdsglobal.org/courses से निःशुल्क डाउनलोड के लिए उपलब्ध है।

कॉपीराइट © 2023 Shepherds Global Classroom
पहले अंग्रेज़ी संस्करण से हिन्दी भाषा में अनुवादित

सर्वाधिकार सुरक्षित

छोटे बच्चों के लिए प्रश्न और उत्तर

लेखक: जॉनाथन आर्नोल्ड Johnathan Arnold
जॉनाथन आर्नोल्ड Johnathan Arnold की पुस्तक, *पवित्र आनन्द बच्चों के लिए धर्मशिक्षा-प्रश्नोत्तरी Holy Joys Kids' Catechism,* 2022 में से लिया गया है। इस धर्मशिक्षा-प्रश्नोत्तरी के सुन्दर सचित्र **मुद्रित** संस्करण के लिए holyjoys.org/shop पर जाएँ। इन्हें अनुमति से प्रयोग किया गया है।

बच्चों के लिए प्रश्न और उत्तर

लेखक: डॉ. मैट फ्रीडमैन Dr. Matt Friedman और डॉ. रे ईस्ली Dr. Ray Easley
डॉ. मैट फ्रीडमैन Dr. Matt Friedman की पुस्तक, *घर में शिष्यत्व Discipleship in the Home,* में से लिया गया है (Wilmore: Francis Asbury Society, 2010), पृ. 125-143.
अनुमति द्वारा उपयोग किया गया, मामूली परिवर्तन के साथ 126 से 116 प्रश्नों को थोड़ा संक्षिप्त किया गया।

नीतिवचन से सिद्धान्त

लेखक: डॉ. स्टीफन के. गिब्सन Dr. Stephen K. Gibson

अनुमति सूचना:

इस पुस्तक को निम्नलिखित दिशानिर्देशों के अन्तर्गत प्रिंट और डिजिटल प्रारूप में स्वतंत्रपूर्वक छापा और वितरित किया जा सकता है: (1) पुस्तक की सामग्री में किसी भी तरह से बदलाव नहीं किया जाना चाहिए; (2) इसकी प्रतियाँ मुनाफ़े के लिए बेची न जाएँ; (3) शैक्षणिक संस्थान इस पुस्तक का उपयोग/प्रतिलिपि बनाने के लिए स्वतंत्र हैं, भले ही वे शिक्षा शुल्क ही क्यों न लेते हों; और (4) Shepherds Global Classroom की अनुमति और पर्यवेक्षण के बिना इस पुस्तक का अनुवाद न किया जाए।

विषय-वस्तु

प्रेरितों का विश्वास वचन 7

प्रभु की प्रार्थना 8

भाग 1 परिचय 9

संसाधन 1: छोटे बच्चों के लिए प्रश्न और उत्तर 11

संसाधन 2: बच्चों के लिए प्रश्न और उत्तर 17

भाग 2 परिचय 35

संसाधन 3: नीतिवचन से सिद्धान्त 37

भाग 1

प्रेरितों का विश्वास वचन

मैं विश्वास रखता हूँ सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर पर,
जो स्वर्ग और पृथ्वी का सृष्टिकर्ता है;

और उसके एकलौते पुत्र, हमारे प्रभु यीशु मसीह पर;
कि वह पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से देहधारी होकर, कुँवारी मरियम से उत्पन्न हुआ;
पुन्तियुस पिलातुस के राज्य में दुःख उठाया,
क्रूस पर चढ़ाया गया, मारा, और गाड़ा गया;
वह अधोलोक में गया।
तीसरे दिन वह मृतकों में से फिर जी उठा;
वह स्वर्ग पर चढ़ गया;
और सर्वसामर्थी पिता परमेश्वर की दाहिने हाथ पर विराजमान है;
जहाँ से वह जीवितों और मृतकों का न्याय करने के लिए आएगा।

मैं विश्वास रखता हूँ पवित्र आत्मा पर;
पवित्र सार्वलौकिक* कलीसिया पर;
संतों की संगति;
पापों की क्षमा;
देह के पुनरुत्थान;
और अनन्त जीवन पर। आमीन।

*अर्थात्, सभी समयों और सभी स्थानों की सच्ची मसीही कलीसिया।

प्रभु की प्रार्थना

हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए।
तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।
हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।
और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर।
और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा;
क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन।

मत्ती 6:9-13

भाग 1 परिचय

प्रश्न और उत्तर के साथ शिक्षण

प्रश्न पूछना और उनके संक्षिप्त, सरल उत्तर देना एक ऐसी प्रभावी शिक्षण पद्धति है, जिसका इस्तेमाल सदियों से किया जाता रहा है।

इस पुस्तक के प्रश्न और उत्तर बुनियादी मसीही मान्यताओं का परिचय देते हैं।

संसाधन 1 अत्याधिक छोटे बच्चों को सिखाने के लिए उपयोगी है। वे जैसे-जैसे बड़े होते जातें हैं, यह उन्हें अतिरिक्त शिक्षा के लिए मजबूत नींव प्रदान करता है।

संसाधन 2 बच्चों और नए विश्वासियों को सिखाने के लिए उपयोगी है। इसमें दिए गए उत्तर ऐसी संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, जिन्हें ऐसे आगे की चर्चा और सीखने के अवसरों का निर्माण होता है। यह शिक्षण एक घर के ढाँचे के समान है: यह अपने आप में पूर्ण नहीं है, परन्तु यह एक ऐसा ढाँचा प्रदान करता है, जिस पर मसीही विश्वास की महत्वपूर्ण बातों का निर्माण किया जा सकता है।

एक परिवार के रूप में इन संसाधनों का इस्तेमाल कैसे करें

इनमें से किसी भी संसाधन का उचित तरीके से इस्तेमाल करने के लिए, प्रत्येक प्रश्न के उत्तर को ठीक वैसे याद किया जाना चाहिए, जैसा उसे लिखा गया है। उत्तरों को सारांशित या संक्षिप्त नहीं किया जाना चाहिए। इसके बजाय, उन शब्दों को सटीकता से दोहराया जाना चाहिए। सटीक शब्दों को याद करने से लम्बे समय तक याद रखने में सहायता मिलती है और यह छात्रों की सटीक होने में सहायता करता है।

इस पुस्तक से प्रश्नों और उत्तरों की समीक्षा के लिए प्रतिदिन 10 मिनट के समय को अलग रखें। कुछ परिवारों को लगता है कि भोजन के समय, यानी जब सभी लोग उपस्थित होते हैं, अध्ययन करने का सबसे अच्छा समय होता है।

यह पुस्तक शिक्षण के समय की केवल अगुवाई करने वाले व्यक्ति के हाथ में होनी चाहिए। अगुवे को प्रश्न पढ़ना चाहिए और फिर उसका उत्तर बताना चाहिए, जबकि अन्य लोग उसे सुनें और फिर एक मिलकर दोहराएँ।

प्रश्न और उत्तर को दोबारा पढ़ें, और छोटे बच्चों को साथ-साथ दोहराने के लिए कहें। वयस्क व्यक्ति को प्रश्न को दोहराते रहना चाहिए। धीरे-धीरे (कुछ दिनों में) वयस्क को उत्तर को दोहराना बन्द कर देना चाहिए, क्योंकि बच्चे को जैसे-जैसे शब्द याद हो जाते हैं, वह उन्हें बिना सहायता के बोल सकता है। वयस्क व्यक्ति पूछता है, बच्चा उत्तर देता है—यह प्रश्न-और-उत्तर सीखने का सार है।

संसाधन 2 के लिए अतिरिक्त निर्देश

प्रत्येक नए प्रश्न को केवल तब जोड़ें जब सब लोगों ने पिछला उत्तर लगभग याद कर लिया हो।

सूची में नीचे की ओर बढ़ते रहें, हमेशा समीक्षा करते रहें, समीक्षा करते रहें, समीक्षा करते रहें, जब पिछले प्रश्न-उत्तर के अधिकतर शब्द याद हो जाएँ, तो धीरे-धीरे प्रश्न जोड़ते रहें।

जब प्रश्नों के पूरे खण्ड को एक साथ बोला जा सकता हो, तब उत्तरों को थोड़े समय की स्मृति से लम्बे समय की स्मृति की ओर ले जाने के लिए सप्ताह में एक बार पूरे खण्ड को दोहराएँ।

धीरे-धीरे नई-नई बातें जोड़ें और **दोहराते रहें** —ये दो पद्धतियाँ उन छात्रों के बीच अद्भुत परिणाम देंगी जो किसी इच्छुक शिक्षक, मित्र या माता-पिता की अगुवाई का अनुसरण करने में थोड़ा समय बिताते हैं। सीखने के सत्र को मज़ेदार बनाएँ और छात्र की सफलता का आनन्द मनाएँ।

आप दैनिक पारिवारिक आराधना के भाग के रूप में प्रश्न और उत्तर शामिल कर सकते हैं। आप बच्चों की कलीसियाई सभाओं में बच्चों की प्रतियोगिता करने के लिए उनका इस्तेमाल कर सकते हैं। आप छात्रों की समझने में सहायता करने के लिए अतिरिक्त व्याख्याएँ और उदाहरण विकसित कर सकते हैं।

एक परिवारिक आराधना योजना

मिलकर पारिवारिक आराधना करने के बहुत से तरीके हैं। यह एक सम्भावित पारिवारिक आराधना क्रम है, जिसमें इन संसाधनों का इस्तेमाल किया जा सकता है।

1. एक भजन गाएँ।
2. **प्रेरितों का विश्वास वचन** दोहराएँ।
3. **प्रश्नों और उत्तरों** के एक भाग को याद करने पर काम करें।
4. बाइबल का एक अध्याय या खण्ड पढ़ें।*
5. प्रार्थना निवेदन माँगते हुए, प्रार्थना करें।**
6. **प्रभु की प्रार्थना** के साथ समापन करें।

* मत्ती, मरकुस, लूका, **और यूहन्ना रचित** सुसमाचार को पढ़कर शुरुआत करें।

** आप कह सकते हैं, “हम तुम्हारे लिए कैसे प्रार्थना कर सकते हैं?” और “हम दूसरों के लिए कैसे प्रार्थना कर सकते हैं?”

संसाधन 1

छोटे बच्चों के लिए प्रश्न और उत्तर

पहले प्रश्न

1. कौन आपसे आपकी मम्मी और पापा से भी बढ़कर प्रेम करता है?

   उत्तर: परमेश्वर

2. परमेश्वर ने आपको क्यों बनाया?

   उत्तर: आनन्दित रहने के लिए

3. आप आनन्दित कैसे रह सकते हैं?

   उत्तर: परमेश्वर से प्रेम करके

4. क्या कोई और बात आपको हमेशा के लिए आनन्द दे सकती है?

   उत्तर: नहीं

परमेश्वर

5. कितने ईश्वर हैं?

   उत्तर: एक

6. परमेश्वर में कितने जन हैं?

   उत्तर: तीन

7. परमेश्वर में पहला जन कौन है?

   उत्तर: पिता

8. परमेश्वर में दूसरा जन कौन है?

   उत्तर: पुत्र

9. परमेश्वर में तीसरा जन कौन है?

    उत्तर: पवित्र आत्मा ने

सृष्टि

10. सब वस्तुओं को किसने बनाया?

    उत्तर: परमेश्वर पिता ने

11. परमेश्वर ने सभी वस्तुएँ किसके द्वारा बनाईं?

    उत्तर: पुत्र और आत्मा

12. परमेश्वर सभी वस्तुएँ बनाने में कैसे सक्षम है?

    उत्तर: वह सर्वशक्तिमान है

मनुष्यजाति

13. परमेश्वर ने आपको कैसे बनाया?

    उत्तर: उसके स्वरूप में

14. इस बात से आपको कैसे शान्ति मिलती है?

    उत्तर: मैं परमेश्वर के लिए महत्व रखता हूँ

15. चूँकि सब परमेश्वर के स्वरूप में बने हैं, इसलिए हमें उनके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए?

    उत्तर: दया और आदर सहित

पाप

16. पहला पुरुष और स्त्री कौन थे?

    उत्तर: आदम और हव्वा

17. आदम और हव्वा ने क्या किया?

    उत्तर: उन्होंने पाप किया

18. पाप क्या है?

    उत्तर: परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करना

19. पाप का परिणाम क्या होता है?

    उत्तर: मृत्यु

देहधारण

20. हमें पाप और मृत्यु से बचाने के लिए परमेश्वर ने किसे भेजा?

    उत्तर: अपने एकलौते पुत्र को

21. परमेश्वर का पुत्र कौन है?

    उत्तर: यीशु मसीह

22. यीशु की माँ कौन थी?

    उत्तर: कुँवारी मरियम

23. मरियम को बालक यीशु किसने दिया?

    उत्तर: पवित्र आत्मा ने

प्रायश्चित

24. यीशु की मृत्यु कैसे हुई?

    उत्तर: उसे क्रूस पर चढ़ाया गया था

25. यीशु क्यों मरा?

    उत्तर: हमारे पापों के लिए

26. तीसरे दिन क्या हुआ?

    उत्तर: वह फिर से जी उठा

27. क्योंकि यीशु मरा और फिर से जी उठा, इसलिए हम क्या विश्वास करते हैं?

    उत्तर: वह परमेश्वर है

उद्धार

28. यीशु कहाँ चला गया?

    उत्तर: स्वर्ग में अपने पिता के पास

29. यीशु अभी क्या कर रहा है?

    उत्तर: राजा के रूप में राज्य कर रहा है

30. यीशु फिर से क्यों आने वाला है?

    उत्तर: सबका न्याय करने के लिए

31. उद्धार पाने के लिए आपको क्या करना चाहिए?

    उत्तर: यीशु पर विश्वास करें

32. यदि आप पाप करते हैं, तो आपको क्या करना चाहिए?

    उत्तर: परमेश्वर से क्षमा माँगें

पवित्र आत्मा और कलीसिया

33. परमेश्वर ने हमें बचाने के लिए और किसे भेजा?

    उत्तर: पवित्र आत्मा ने

34. पवित्र आत्मा आपके लिए क्या करता है?

    उत्तर: वह मेरी सहायता करता है

35. पवित्र आत्मा आपकी सहायता कैसे करता है?

    उत्तर: कलीसिया के द्वारा

36. कलीसिया क्या है?

    उत्तर: परमेश्वर का परिवार

37. आप कलीसिया से कैसे जुड़ते हैं?

    उत्तर: बपतिस्मा के द्वारा

शान्ति

38. क्या आपको डरने की आवश्यकता है?

    उत्तर: नहीं

39. आपको डरने की आवश्यकता क्यों नहीं है?

    उत्तर: परमेश्वर मेरे साथ है

40. क्या आप परमेश्वर को देख सकते हैं?

    उत्तर: नहीं

41. क्या परमेश्वर आपको देख सकता है?

    उत्तर: हाँ

पवित्रीकरण

42. परमेश्वर आपको किसके जैसा बनाना चाहता है?

    उत्तर: यीशु

43. पहली चार आज्ञाओं में आपके लिए परमेश्वर की इच्छा क्या है?

    उत्तर: परमेश्वर से प्रेम करना

44. अन्तिम छह आज्ञाओं में आपके लिए परमेश्वर की इच्छा क्या है?

    उत्तर: अपने पड़ोसी से प्रेम करना

45. परमेश्वर क्या चाहता है कि आप किसकी आज्ञा मानें?

    उत्तर: मम्मी और पापा की

46. प्रार्थना क्या है?

    उत्तर: परमेश्वर से बात करना

47. यीशु ने हमें कौन सी प्रार्थना करनी सिखाई?

    उत्तर: प्रभु की प्रार्थना

48. परमेश्वर आपसे कैसे बात करता है?

    उत्तर: बाइबल के द्वारा

49. बाइबल क्या है?

    उत्तर: परमेश्वर का वचन

अन्तिम बातें

50. परमेश्वर किसे नया बना रहा है?

    उत्तर: सब वस्तुओं को

51. परमेश्वर मरे हुओं में से किसे जिलाएगा?

    उत्तर: हमारे शरीरों को

52. अब हम किस बात का आनन्द लेते हैं और युगानयुग उसका आनन्द लेते रहने की आशा रखते हैं?

    उत्तर: अनन्त जीवन

दस आज्ञाएँ (आसान भाषा में)

मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, जिस ने तुझे बचाया है।

1. तू मुझे छोड़ किसी और को ईश्वर करके न मानना।
2. तू कोई मूर्ति न बनाना।
3. तू अपने परमेश्वर यहोवा का नाम व्यर्थ न लेना।
4. तू विश्रामदिन को पवित्र मानकर उसे स्मरण रखना।
5. अपने पिता और अपनी माता का आदर करना।
6. तू खून न करना।
7. तू व्यभिचार न करना।
8. तू चोरी न करना।
9. तू झूठ न बोलना।
10. तू लालच न करना।

संसाधन 2
बच्चों के लिए प्रश्न और उत्तर

बाइबल से सम्बन्धित में प्रश्न

1. हम परमेश्वर से प्रेम करना और उसकी आज्ञा का पालन करना कहाँ सीखते हैं?

   उत्तर: बाइबल में

2. बाइबल क्या है?

   उत्तर: परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गई 66 पुस्तकें, जो हमें परमेश्वर के बारे में सिखाती हैं और सिखाती हैं कि हम वैसे पवित्र कैसे बन सकते हैं, जैसा कि वह पवित्र है

3. बाइबल को किसने लिखा?

   उत्तर: परमेश्वर ने 1,600 से अधिक वर्षों की अवधि के दौरान 40 से अधिक लोगों का मार्गदर्शन किया और उन्हें प्रेरणा दी।

4. बाइबल की उन पाँच पुस्तकों के नाम बताओ जिन्हें व्यवस्था कहा जाता है।

   उत्तर: उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण

5. व्यवस्था का संदेश क्या है?

   उत्तर: परमेश्वर पवित्र है, और वह चाहता है कि हम उसके समान बनें।

6. पुराने नियम की ऐतिहासिक पुस्तकों के नाम बताइए।

   उत्तर: यहोशू, न्यायियों, रूत 1 और 2 शमूएल, 1 और 2 राजाओं, 1 और 2 इतिहास, एज्रा, नहेम्याह, एस्तेर

7. ऐतिहासिक पुस्तकों का संदेश क्या है?

   उत्तर: अच्छी बातें तब आती हैं, जब हम पूरे मन से परमेश्वर के पीछे चलते हैं। बुरी बातें तब आती हैं, जब हम ऐसा नहीं करते।

8. पुराने नियम में काव्य साहित्य सम्बन्धी पुस्तकों के नाम बताइए।

उत्तर: अय्यूब, भजन संहिता, नीतिवचन, सभोपदेशक, श्रेष्ठगीत

9. काव्य साहित्य सम्बन्धी पुस्तकों का संदेश क्या है?

   उत्तर: जब हम सभी परिस्थितियों में परमेश्वर को खोजते हैं तो हम धन्य हो जाते हैं।

10. पुराने नियम में बड़े भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों के नाम बताइए।

    उत्तर: यशायाह, यिर्मयाह, विलापगीत, यहेजकेल, दानिय्येल

11. पुराने नियम में छोटे भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों के नाम बताइए।

    उत्तर: होशे, योएल, आमोस, ओबद्याह, योना, मीका, नहूम, हबक्कूक, सपन्याह, हाग्गै, जकर्याह, मलाकी

12. इन्हें "छोटे" भविष्यद्वक्ता क्यों कहा जाता है?

    उत्तर: वे बड़े भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों की तुलना में छोटी पुस्तकें हैं।

13. भविष्यद्वक्ताओं का संदेश क्या है?

    उत्तर: परमेश्वर की व्यवस्था और प्रेम की ओर लौट आओ।

14. नए नियम के सुसमाचारों के नाम बताइए।

    उत्तर: मत्ती, मरकुस, लूका, और यूहन्ना,

15. सुसमाचारों का संदेश क्या है?

    उत्तर: यीशु हमारे लिए आया, जिया, मरा, और फिर से जी उठा।

16. उस पुस्तक का नाम बताइए जो यीशु के पुनरुत्थान के बाद प्रारम्भिक कलीसिया का इतिहास बताती है।

    उत्तर: प्रेरितों के काम

17. प्रेरितों के काम का संदेश क्या है?

    उत्तर: पवित्र आत्मा कलीसिया में आया, और परमेश्वर का वचन फैल गया।

18. पौलुस की पत्रियों का नाम बताएँ।

    उत्तर: रोमियों, 1 और 2 कुरिन्थियों, गलातियों, इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों, 1 और 2 थिस्सलुनिकियों, 1 और 2 तीमुथियुस, तीतुस, फिलेमोन

19. पौलुस की पत्रियों का संदेश क्या है?

    उत्तर: परमेश्वर के अनुग्रह और उसकी धार्मिकता में जियो।

20. साधारण पत्रियों का नाम बताइये।

    उत्तर: इब्रानियों, याकूब, 1 और 2 पतरस, 1 और 2 और 3 यूहन्ना, और यहूदा

21. साधारण पत्रियों का संदेश क्या है?

    उत्तर: संसार में परमेश्वर के लोगों के रूप में जीएँ

22. बाइबल की अन्तिम पुस्तक का नाम बताइए?

    उत्तर: प्रकाशितवाक्य

23. प्रकाशितवाक्य का संदेश क्या है?

    उत्तर: यीशु राजाओं का राजा है और शीघ्र ही अपनी विजयी कलीसिया को लेने आ रहा है।

24. बाइबल की सभी 66 पुस्तकों के नाम बताएँ।

उत्तर:

पुराना नियम

उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण,
यहोशू, न्यायियों, रूत 1 और 2 शमूएल,
1 और 2 राजाओं, 1 और 2 इतिहास, एज्रा, नहेम्याह, एस्तेर
अय्यूब, भजन संहिता, नीतिवचन, सभोपदेशक, श्रेष्ठगीत
यशायाह, यिर्मयाह, विलापगीत, यहेजकेल, दानिय्येल,
होशे, योएल, आमोस, ओबद्याह, योना, मीका, नहूम,
हबक्कूक, सपन्याह, हाग्गै, जकर्याह, मलाकी

नया नियम

मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना, प्रेरितों के काम, रोमियों, 1 और 2 कुरिन्थियों,
गलातियों, इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों,
1 और 2 थिस्सलुनिकियों, 1 और 2 तीमुथियुस, तीतुस,
फिलेमोन, इब्रानियों, याकूब, 1 और 2 पतरस,
1 और 2 और 3 यूहन्ना, यहूदा, प्रकाशितवाक्य

25. परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी गई इन 66 पुस्तकों का संदेश क्या है?

उत्तर: ये हमें परमेश्वर के बारे में सिखाती हैं और यह कि हम वैसे पवित्र कैसे बन सकते हैं, जैसा वह पवित्र है; हमें कैसे छुड़ाया जा सकता है और यीशु मसीह के स्वरूप में कैसे बदला जा सकता है।[1]

दस आज्ञाओं से सम्बन्धित में प्रश्न

26. परमेश्वर की आज्ञा क्या होती है?

उत्तर: परमेश्वर कौन है, इसकी एक तस्वीर और हम क्या बन सकते हैं, इसकी एक प्रतिज्ञा

[1] वाक्यांश, "हमें कैसे छुड़ाया जा सकता है और यीशु मसीह के स्वरूप में कैसे बदला जा सकता है।" मूल उत्तर में जोड़ी गई बात है।

27. बाइबल में दस आज्ञाएँ कहाँ पाई जाती हैं?

    उत्तर: निर्गमन 20:1-17 में

28. दस आज्ञाएँ क्या हैं?

    उत्तर: सीनै पर्वत पर परमेश्वर के लोगों को दी गई आज्ञाएँ

29. दस आज्ञाएँ किसने दीं?

    उत्तर: परमेश्वर ने

30. दस आज्ञाएँ किसने प्राप्त कीं?

    उत्तर: मूसा ने

31. पहली आज्ञा है, "तू मुझे छोड़ दूसरों को ईश्वर करके न मानना" इस आज्ञा का क्या अर्थ है?

    उत्तर: हमें परमेश्वर को हमेशा पहले स्थान पर रखना चाहिए।

32. दूसरी आज्ञा है "तू अपने लिये कोई मूर्ति खोदकर न बनाना..।" इस आज्ञा का क्या अर्थ है?

    उत्तर: परमेश्वर के अलावा किसी भी वस्तु की आराधना करना गलत है।

33. तीसरी आज्ञा है "तू अपने परमेश्वर का नाम व्यर्थ न लेना...।" इस आज्ञा का क्या अर्थ है?

    उत्तर: हमें परमेश्वर का उल्लेख बड़े आदर के साथ करना चाहिए।

34. चौथी आज्ञा है "तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिए स्मरण रखना...।" इस आज्ञा का क्या अर्थ है?

    उत्तर: रविवार को हमें परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए और विश्राम करना चाहिए।

35. पाँचवीं आज्ञा है "अपने पिता और अपनी माता का आदर करना..." इस आज्ञा का क्या अर्थ है?

    उत्तर: हमें अपने माता-पिता से प्रेम करना चाहिए और उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए।

36. छठी आज्ञा है "तू खून न करना।" इस आज्ञा का क्या अर्थ है?

    उत्तर: हमें अनुचित तरीके से दूसरे लोगों की हत्या नहीं करनी चाहिए।

37. सातवीं आज्ञा है "तू व्यभिचार न करना" इस आज्ञा का क्या अर्थ है?

    उत्तर: यौन सम्बन्ध केवल विवाह के लिए हैं।

38. आठवीं आज्ञा है “तू चोरी न करना।” इस आज्ञा का क्या अर्थ है?

    उत्तर: हमें वे वस्तुएँ नहीं लेनी चाहिए, जो हमारी नहीं हैं।

39. नौवीं आज्ञा है “तू किसी के विरुद्ध झूठी साक्षी न देना।” इस आज्ञा का क्या अर्थ है?

    उत्तर: हमें हमेशा सच बोलना चाहिए।

40. दसवीं आज्ञा है “तू लालच न करना...” इस आज्ञा का क्या अर्थ है?

    उत्तर: हमें परमेश्वर ने जो कुछ दिया है, उसमें ही संतुष्ट रहना चाहिए।

41. यीशु ने किन दो आज्ञाओं को सबसे बड़ी आज्ञाएँ कहा है?

    उत्तर: तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन, अपने सारे प्राण, अपने सारे बुद्धि के साथ प्रेम रख; और तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम ।

42. ये सभी आज्ञाएँ हमारे लिए क्यों महत्वपूर्ण हैं?

    उत्तर: वे उस जीवन के विषय में बताती हैं, जो हमारा पवित्र परमेश्वर हमारे लिए चाहता है।

अतिरिक्त प्रश्न: निर्गमन 20:1-17 में दी गई दस आज्ञाओं के पूरे मूलपाठ को उद्धृत करें।

प्रभु की प्रार्थना से सम्बन्धित प्रश्न

43. प्रभु की प्रार्थना सबसे पहले किसने की?

    उत्तर: यीशु ने तब की जब उसने अपने बारह चेलों को प्रार्थना करना सिखाया

44. बाइबल में प्रभु की प्रार्थना कहाँ मिलती है?

    उत्तर: मत्ती 6:9-13 में

45. प्रभु की प्रार्थना के शब्द क्या हैं?

उत्तर:

हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए।
तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।
हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।
और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर।
और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा;
क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं। आमीन।

46. इसका क्या अर्थ है: "तेरा नाम पवित्र माना जाए"

उत्तर: हम अपने पवित्र परमेश्वर का आदर करना और उससे प्रेम करना चाहते हैं।

47. इसका क्या अर्थ है: "तेरा राज्य आए"

उत्तर: परमेश्वर हमारा राजा है। हम चाहते हैं कि संसार में सब लोग उसे राजा के रूप में जाने।

48. इसका क्या अर्थ है: "तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसी पृथ्वी पर भी हो"

उत्तर: हम वह सब कुछ चाहते हैं, जो परमेश्वर चाहता है।

49. इसका क्या अर्थ है: "हमारे दिन भर की रोटी आज हमें दे"

उत्तर: हम परमेश्वर से हमारी सभी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रार्थना करते हैं।

50. इसका क्या अर्थ है: "जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर"

उत्तर: हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि जैसे हम दूसरों को क्षमा करते हैं, वैसे ही वह भी हमें क्षमा करे।

51. इसका क्या अर्थ है: "हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा"

उत्तर: हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें सब पापों से बचाए।

52. इसका क्या अर्थ है: "क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं।"

उत्तर: परमेश्वर सर्वशक्तिमान राजा है, वह स्वर्ग और पृथ्वी पर युगानयुग राज्य करता है।

53. **प्रभु की प्रार्थना क्यों महत्वपूर्ण है?**

उत्तर: यह हमें अपने पवित्र पिता के रूप में परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करने में सहायता करता है।

धन्य वचनों से सम्बन्धित प्रश्न

54. **धन्य वचन क्या हैं?**

उत्तर: पवित्र चरित्र के बारे में यीशु की शिक्षा

55. **धन्य वचन कहाँ पाए जाते हैं?**

उत्तर: मत्ती 5:3-10 में

56. **धन्य वचनों के नाम बताएँ।**

उत्तर:

धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं,
क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

धन्य हैं वे जो शोक करते हैं,
क्योंकि वे शांति पाएँगे।

धन्य हैं वे जो नम्र हैं,
क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे।

धन्य हैं वे जो धार्मिकता के भूखे और प्यासे हैं,
क्योंकि वे तृप्त किए जाएँगे।

धन्य हैं वे जो दयावन्त हैं,
क्योंकि उन पर दया की जाएगी।

धन्य हैं वे जिनके मन शुद्ध हैं,
क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।

धन्य हैं वे जो मेल कराने वाले हैं,
क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएँगे।

धन्य हैं वे जो धार्मिकता के कारण सताए जाते हैं,
क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

57. मन के दीन होने का क्या अर्थ है?

उत्तर: यह मान लेना कि आपने पाप किया है और आपको परमेश्वर की सहायता की आवश्यकता है

58. शोक करने का क्या अर्थ है?

उत्तर: उन बातों के विषय में शोकित होना जिनसे परमेश्वर को दुःख पहुँचता हैं

59. नम्र होने का क्या अर्थ है?

उत्तर: परमेश्वर को अपने जीवन पर नियंत्रण देना

60. धार्मिकता की भूखे और प्यासे होने का क्या अर्थ है?

उत्तर: अपने जीवन के लिए सचमुच परमेश्वर के पैमानों की इच्छा रखना

61. दयावन्त होने का क्या अर्थ है?

उत्तर: सब लोगों के प्रति दया का भाव रखना

62. मन के शुद्ध होने का क्या अर्थ है?

उत्तर: परमेश्वर से पूरे मन से प्रेम करना

63. मेल कराने वाले होने का क्या अर्थ है?

उत्तर: लोगों की परमेश्वर और एक-दूसरे का मित्र बनने में सहायता करना

64. धार्मिकता के लिए सताए जाने का क्या अर्थ है?

उत्तर: परमेश्वर के राज्य के लिए आनन्द से दुःख सहना

परमेश्वर से सम्बन्धित प्रश्न

65. कितने ईश्वर हैं?

उत्तर: परमेश्वर एक ही है।

66. एक परमेश्वर में कितने जन हैं?

उत्तर: तीन—परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, और परमेश्वर पवित्र आत्मा

67. कौन सा शब्द परमेश्वर को सबसे अच्छी तरह दर्शाता है?

    उत्तर: परमेश्वर पवित्र है।

68. परमेश्वर की आयु कितनी है?

    उत्तर: परमेश्वर अनन्त है। वह हमेशा था। वह हमेशा रहेगा।

69. परमेश्वर कहाँ है?

    उत्तर: परमेश्वर हर उस स्थान पर है जहाँ वह होना चाहता है।

70. परमेश्वर क्या कर सकता है?

    उत्तर: परमेश्वर जो भी करना चाहता है, वह कर सकता है।

71. परमेश्वर क्या जानता है?

    उत्तर: परमेश्वर वह सब कुछ जानता है, जिसे वह जानना चाहता है।

72. क्या कोई वस्तु परमेश्वर से अधिक सामर्थी है?

    उत्तर: नहीं

73. परमेश्वर सृष्टिकर्ता है। उसने क्या बनाया है?

    उत्तर: सब वस्तुओं को

74. परमेश्वर ने आपको क्यों बनाया?

    उत्तर: ताकि वह मुझसे प्रेम कर सके और मुझसे प्रसन्न रह सके

मनुष्यजाति, पाप, उद्धार से सम्बन्धित प्रश्न

75. पुरुष और स्त्री क्या हैं?

    उत्तर: ऐसे लोग जो परमेश्वर को जान सकते हैं और उससे प्रेम कर सकते हैं

76. हमारे पहले माता-पिता कौन थे?

    उत्तर: आदम और हव्वा

77. किस बात ने आदम और हव्वा को सभी पशुओं से अलग बनाया?

उत्तर: आदम और हव्वा के पास आत्माएँ थीं; पशुओं के पास नहीं है।

78. क्या आपके पास आत्मा है?

उत्तर: हाँ, मेरे पास एक आत्मा है, जो कभी नहीं मरेगी।

79. पाप क्या है?

उत्तर: यह (मुख्यतः) परमेश्वर की ज्ञात् व्यवस्था उल्लंघन है।

80. पाप क्या करता है?

उत्तर: यह परमेश्वर के साथ हमारे प्रेमपूर्ण सम्बन्ध को हानि पहुँचाता है

81. पहला पाप किसने किया?

उत्तर: आदम और हव्वा

82. आदम और हव्वा ने कौन सी गलती की ?

उत्तर: उन्होंने वह फल खा लिए, जिसे खाने के लिए परमेश्वर ने उन्हें मना किया था और इससे उनका सम्बन्ध उससे टूट गया।

83. आदम और हव्वा को पाप करने के लिए किसने लुभाया?

उत्तर: शैतान ने

84. हम उस पाप से कैसे प्रभावित हैं?

उत्तर: आदम और हव्वा ने सब मनुष्यों को पाप विरासत में दे दिया; हम सभी जन्मजात पापी हैं।

85. पापी किस बात के योग्य हैं?

उत्तर: परमेश्वर के दण्ड और मृत्यु

86. क्या हम (स्वैच्छिक) पापियों के रूप में स्वर्ग जा सकते हैं?

उत्तर: नहीं

87. यदि हम मरने पर स्वर्ग नहीं जाएँगे, तो कहाँ जाएँगे?

उत्तर: नरक में

88. उद्धार क्या है?

उत्तर: हमारे पापों को क्षमा किया जाना (हमारे लिए यीशु की मृत्यु, उसके गाड़े जाने और पुनरुत्थान पर विश्वास के द्वारा) और परमेश्वर से प्रेम करना

89. हमें उद्धार की आवश्यकता क्यों है?

उत्तर: हम सभी पापी हैं।

90. उद्धार के लिए क्या आवश्यक है?

उत्तर: मसीह यीशु पर विश्वास करने के द्वारा अनुग्रह से ही हमारा उद्धार हुआ है।

91. क्या उद्धार पाने का कोई और तरीका है?

उत्तर: नहीं, हम केवल मसीह यीशु पर विश्वास करने के द्वारा अनुग्रह से ही उद्धार पा सकते हैं।

92. जब हम अपने पाप से बच जाते हैं, तो क्या होता है?

उत्तर: हम परमेश्वर और अपने पड़ोसियों से प्रेम करते हैं और परमेश्वर को प्रसन्न करने की हमारी इच्छा बढ़ते हैं।

यीशु से सम्बन्धित प्रश्न

93. यीशु कौन है?

उत्तर: यीशु परमेश्वर है, जो मनुष्य बना, वह हमारा उद्धारकर्ता है।

94. एक उद्धारकर्ता क्या होता है?

उत्तर: ऐसा एकलौता जन जो हमें हमारे पापों से बचाता है।

95. यीशु मनुष्य है या परमेश्वर?

उत्तर: वह पूर्ण मनुष्य और पूर्ण परमेश्वर दोनों है।

96. यीशु के जन्म में क्या विशेष था?

उत्तर: उसका जन्म पवित्र आत्मा द्वारा कुँवारी मरियम से हुआ था।

97. लगभग 2,000 वर्ष पहले जब यीशु जिया तो उसने क्या किया?

उत्तर: उसने अपने शिष्यों को शिक्षा दी, निर्धनों की देखभाल की, और हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिए क्रूस पर मार गया।

98. हमारे पापों का प्रायश्चित करने का क्या अर्थ है?

उत्तर: इसका अर्थ है कि यीशु ने क्रूस पर मरकर वह दण्ड लिया जिसके हम योग्य थे ताकि हम परमेश्वर के साथ एक सम्बन्ध बना सकें।

99. यीशु की मृत्यु के बाद क्या हुआ?

उत्तर: कब्र में रखे जाने के बाद, वह फिर से जी उठा और उसने मृत्यु को हरा दिया।

पवित्र आत्मा से सम्बन्धित प्रश्न

100. पवित्र आत्मा कौन है?

उत्तर: वह त्रिएक परमेश्वर का तीसरा जन है।

101. यीशु की प्रतिज्ञा के अनुसार पवित्र आत्मा कब आया?

उत्तर: यीशु के पुनरुत्थान के 50 दिन बाद, पिन्तेकुस्त के यहूदी पर्व पर

102. पिन्तेकुस्त क्या है?

उत्तर: कलीसिया का जन्मदिन, जब पवित्र आत्मा ने यीशु के विश्वासियों को भर दिया था

103. पवित्र आत्मा आज क्या करता है?

उत्तर: वह विश्वासियों को पवित्र बनाता है।

104. पवित्र आत्मा लोगों को कैसे पवित्र बनाता है?

उत्तर: वह लोगों को पाप के प्रति क़ायल करता है, उन्हें सिखाता है और उनका मार्गदर्शन करता है, हमें आत्मिक सामर्थ्य देता है, और हमें आत्मिक वरदान और आत्मा का फल देता है।

105. आत्मा का फल क्या है?

उत्तर: आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है।

106. आत्मा का वरदान क्या है?

उत्तर: महान आदेश को पूरा करने में सहायता करने के लिए पवित्र आत्मा द्वारा हमें दी गई एक क्षमता।

107. महान आदेश क्या है?

उत्तर: यीशु ने अपने शिष्यों को आज्ञा दी कि वे जाकर सभी जातियों के लोगों को चेला बनाएँ, उन्हें बपतिस्मा दें और उन्हें उसकी शिक्षाओं का पालन करना सिखाएँ

108. आत्मा की गवाही क्या है?

उत्तर: इस बात की एक आन्तरिक जागरूकता कि हमारे विश्वास से परमेश्वर प्रसन्न होताहै

109. पवित्र आत्मा मेरी कैसे सहायता कर सकता है?

उत्तर: वह मुझे पूरे मन से परमेश्वर और उसकी इच्छा से प्रेम करने में सहायता कर सकता है।

110. एक "सिद्ध" मसीही होने का क्या अर्थ है?[2]

उत्तर: परमेश्वर से अपने सारे मन, सारे प्राण, और सारी शक्ति से प्रेम करना

अन्तिम बातों से सम्बन्धित प्रश्न

111. क्या यीशु किसी दिन व्यक्तिगत्, दृश्य रूप में वापस आएगा?

उत्तर: हाँ

112. यीशु वापस क्यों आएगा?

उत्तर: अपनी कलीसिया को अपने पास ले जाने के लिए

113. ऐसा कब होगा?

उत्तर: हम नहीं जानते कि कब, इसलिए हमें सदैव तैयार रहना चाहिए।

114. हम कैसे तैयार हो सकते हैं?

उत्तर: हर क्षण परमेश्वर के साथ प्रेम भरे सम्बन्ध में जीएँ।

[2] यह प्रश्न मूल नियमावली में प्रश्न 119 था।

115. यीशु के वापस आने के बाद क्या होगा?

उत्तर: सभी लोगों का न्याय किया जाएगा, और शैतान अन्त में पराजित हो जाएगा।

116. शैतान के पराजित होने के बाद क्या होगा?

उत्तर: हम परमेश्वर से प्रेम करेंगे और सदैव उसकी संगति का आनन्द लेंगे।

याद रखने के लिए पवित्रशास्त्र के परिच्छेद

- निर्गमन 19:3-6
- निर्गमन 20:1-17 - दस आज्ञाएँ
- व्यवस्थाविवरण 6:4-9
- भजन संहिता 1
- भजन संहिता 23
- भजन संहिता 24
- भजन संहिता 121
- भजन संहिता 139
- मत्ती 7:21-27
- मत्ती 28:18-20
- यूहन्ना 3:16-21
- 1 कुरिन्थियों 13:1-13
- गलातियों 5:16-25
- इफिसियों 6:10-17
- फिलिप्पियों 2:5-11
- इब्रानियों 12:1-3
- 1 पतरस 2:9-12
- प्रकाशितवाक्य 21:4-8

भाग 2

भाग 2 परिचय

इस संसाधन का उद्देश्य

यह संसाधन परिवार या विद्यालय या अन्य अध्ययन परिदृश्य में इस्तेमाल के लिए नीतिवचन की पुस्तक से लिए गए जीवन के सिद्धान्त प्रदान करता है। इस पाठ्य-सामग्री को एक समय में एक ही पाठ के रूप में सिखाने के लिए नहीं बनाया गया है। प्रत्येक दिन एक या दो सिद्धान्तों को सिखाना और उन पर चर्चा करना सबसे अच्छा है।

सिखाने का तरीका

(1) आप में से किसी एक को एक सिद्धान्त से जुड़ी हुई आयत पढ़नी चाहिए। यदि कई आयतें हों, तो माता-पिता/शिक्षक यह चुन सकते हैं कि कौन सी आयत का इस्तेमाल करना है।

(2) माता-पिता/शिक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि श्रोता आयतों के शब्दों और कथनों को समझ पा रहे हैं।

(3) माता-पिता/शिक्षक आयत पर आधारित सिद्धान्त को साझा कर सकते हैं।

(4) माता-पिता/शिक्षक और अन्य लोग ऐसी जीवन स्थितियों का वर्णन कर सकते हैं, जहाँ यह सिद्धान्त लागू होता है।

नीतिवचन में पाए जाने वाले सिद्धान्त

नीतिवचन की पुस्तक में *परमेश्वर का भय* मानना एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। परमेश्वर का उचित रूप से भय मानने का अर्थ है, तीन बातों को जानना: अर्थात् वह कौन है, हमें उसकी आज्ञा माननी चाहिए, और हमें अनाज्ञाकारिता का दण्ड मिलेगा।

नीतिवचन में *बुद्धि* एक मूल विषय है। *बुद्धि* होने का अर्थ है, परमेश्वर के दृष्टिकोण और मूल्यों को स्वीकार करना और उनका पालन करना। परमेश्वर बातों को वैसा ही देखता है, जैसा वह सचमुच हैं, इसलिए जब हम परमेश्वर की कहीं हुई बातों पर विश्वास करते हैं और उसके निर्देशों का पालन करते हैं तो हम बुद्धिमान होते हैं।

माता-पिता और शिक्षकों को नीतिवचन के सिद्धान्तों का पालन करने के लिए व्यक्तिगत् रूप से प्रतिबद्ध होना चाहिए। उन्हें अपने जीवन में सिद्धान्तों के अभ्यास को प्रकट करना चाहिए। उन्हें अपने बच्चों और छात्रों को ये सिद्धान्त सिखाने चाहिए और इन सिद्धान्तों को जीवन की स्थितियों में लागू करने के तरीकों की खोज करनी चाहिए।

संसाधन 3
नीतिवचन से सिद्धान्त

1. परमेश्वर की बुद्धि को जानना ऐसा सबसे महत्वपूर्ण काम है जिसे मैं कर सकता हूँ (नीतिवचन 2:4-5, नीतिवचन 4:5)।
2. मैं जो कुछ भी सुनता हूँ, मुझे उन सब बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए (नीतिवचन 14:15)।
3. मुझे अपने सभी निर्णयों में परमेश्वर की इच्छा का अनुसरण करना चाहिए, ताकि वह मेरा मार्गदर्शन कर सके (नीतिवचन 3:5-6)।
4. मुझे अपने पिता और माता की सलाह और बुद्धिमता की बातों को सुनना चाहिए (नीतिवचन 1:8)।
5. अच्छी सलाह से मेरे जीवन को आशीष मिलती है और इससे मुझे दूसरों की सहायता करने का अवसर मिलता है (नीतिवचन 10:17)।
6. यदि मैं अच्छी शिक्षा अनदेखा करूँ, तो विपत्ति मुझ पर आन पड़ेगी (नीतिवचन 13:18)।
7. अच्छी शिक्षा विकसित होने और सुधार करने में मेरी सहायता करती है (नीतिवचन 9:9)।
8. परमेश्वर नहीं चाहता कि मैं हिंसक या धोखेबाज बनूँ (नीतिवचन 3:31-32)।
9. मुझे अपने मन में सही मंशाएँ रखनी चाहिए (नीतिवचन 4:23, नीतिवचन 12:5)।
10. मैं जो करता हूँ, उसका असली कारण परमेश्वर ही जानता है। (नीतिवचन 16:2)।
11. यदि मैं ज्ञान और सुधार को अनदेखा करता हूँ, तो मैं मूर्ख हूँ (नीतिवचन 1:22, नीतिवचन 12:1)।
12. परमेश्वर की इच्छा का अनुसरण करना मुझे बहुत सी विपत्तियों से बचाता है (नीतिवचन 1:33)।
13. मैं परमेश्वर पर भरोसा रखकर भय से स्वतंत्र हो सकता हूँ (नीतिवचन 3:25-26)।
14. मुझे अपनी समझ और क्षमताओं पर निर्भर रहने के बजाय परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए (नीतिवचन 3:7, नीतिवचन 11:2, नीतिवचन 12:15)।
15. मैं पापों को हमेशा के लिए छिपा नहीं सकता (नीतिवचन 10:9)।
16. परमेश्वर के नियम मेरी रक्षा करते हैं और मेरी सहायता करते हैं (नीतिवचन 6:23-24)।

17. यदि मैं अपनी इच्छाओं और भावनाओं पर नियंत्रण रख पाता हूँ, तो मैं बलवन्त होता हूँ (नीतिवचन 16:32, नीतिवचन 25:28)।

18. यदि मैं लापरवाही से बोलता हूँ, तो मैं स्वयं और दूसरों को हानि पहुँचाता हूँ (नीतिवचन 10:8, नीतिवचन 10:21)।

19. मुझे उन लोगों से दूर रहना चाहिए, जो मुझसे गलत काम कराने का प्रयास करते हैं (नीतिवचन 1:10-15, नीतिवचन 4:14-15, नीतिवचन 14:7, 16)।

20. मुझे ऐसे मित्र चुनने चाहिए, जिनके जैसा चरित्र मैं चाहता हूँ (नीतिवचन 13:20)।

21. मैं जो कुछ करता हूँ, परमेश्वर उसे देखता है (नीतिवचन 5:21, नीतिवचन 15:3)।

22. यदि मैं विश्वासयोग्य और भरोसेमंद रहता हूँ तो मेरे मित्र मुझे महत्व देते हैं (नीतिवचन 19:22)।

23. मैं जिन लोगों से प्रेम करता हूँ, उनके साथ जीवन को साझा करना भोग-विलास से बेहतर है (नीतिवचन 15:17)।

24. मुझे निर्णयों पर सावधानीपूर्वक विचार करने के लिए पर्याप्त समय लेना चाहिए (नीतिवचन 21:5, नीतिवचन 19:2)।

25. यदि मैं बुद्धिमान हूँ, तो ज्ञान से प्रीति रखूंगा, और सावधान रहूँगा (नीतिवचन 8:12)।

26. मैं नशीले पेय पदार्थों से दूर रहूँगा क्योंकि वे बुरे व्यवहार का कारण बनते हैं (नीतिवचन 20:1)।

27. मुझे दूसरों से बदला लेने का प्रयास नहीं करना चाहिए बल्कि न्याय के लिए परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए (नीतिवचन 20:22)।

28. मुझे दूसरों से लड़ने के बजाय मेल करने का प्रयास करना चाहिए (नीतिवचन 3:30, नीतिवचन 20:3, नीतिवचन 10:12)।

29. मुझे दूसरों को परेशानी में डालने के लिए कभी झूठ नहीं बोलना चाहिए (नीतिवचन 30:10)।

30. यदि मैं भरोसेमंद हूँ, तो समस्याएँ उत्पन्न करने वाले रहस्य नहीं बताऊँगा (नीतिवचन 11:13, नीतिवचन 20:19)।

31. यदि मेरा चरित्र अच्छा है, तो मैं सच बोलूँगा। (नीतिवचन 13:5, नीतिवचन 14:5)।

32. मुझे बोलने से पहले अच्छी तरह सोच लेना चाहिए (नीतिवचन 15:28)।

33. मुझे दूसरों की आलोचना करने और उनसे झगड़ने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए (नीतिवचन 11:12, नीतिवचन 17:27)।

34. यदि मैं शीघ्र क्रोधित हो जाता हूँ, तो मैं मूर्ख हूँ (नीतिवचन 12:16, नीतिवचन 14:29)।

35. मुझे इस विषय में सावधान रहना चाहिए कि मेरे शब्दों से लोगों को आशीष मिलेगी और न कि उनकी हानि होगी (नीतिवचन 12:18, नीतिवचन 12:25, नीतिवचन 16:24, नीतिवचन 18:21)।

36. मुझे हमेशा सच बोलना चाहिए (नीतिवचन 4:24, नीतिवचन 12:17)।

37. मुझे कोई राय देने से पहले तथ्यों को सुनना चाहिए (नीतिवचन 18:13)।

38. यदि मैं बहुत अधिक बोलता हूँ, तो पाप से भरी हुई बातें कहता हूँ (नीतिवचन 10:19)।

39. मुझे बूढ़ों का विशेष आदर करना चाहिए (नीतिवचन 16:31, नीतिवचन 20:29)।

40. दयालुता और सच्चाई के कारण मुझे परमेश्वर से आशीष और लोगों से आदर मिलेगा (नीतिवचन 3:3-4)।

41. जब मैं गलत काम करूँगा तो परमेश्वर मेरी ताड़ना करेगा, क्योंकि वह मुझ से प्रेम रखता है (नीतिवचन 3:12)।

42. निर्णय लेने से पहले, मुझे परिणामों के बारे में सोच लेना चाहिए (नीतिवचन 22:3)।

43. यदि मैं पाप करूँ, तो मुझे पीड़ादायक परिणाम भुगतना पड़ेंगे (नीतिवचन 6:27)।

44. यदि मैं आलसी हूँ, तो मैं ऐसी घटी में रहूँगा कि मानो मुझे लूट लिया गया हो (नीतिवचन 6:10-11, नीतिवचन 19:15)।

45. मुझे आलसी नहीं होना चाहिए, क्योंकि आलसी होना विनाशकारी होने के समान है (नीतिवचन 18:9)।

46. मुझे अपने भविष्य को बेहतर बनाने के लिए काम करना चाहिए और अवसरों का इस्तेमाल करना चाहिए (नीतिवचन 6:6-8, नीतिवचन 20:13)।

47. मुझे पशुओं के प्रति क्रूर नहीं होना चाहिए (नीतिवचन 12:10)।

48. मुझे अपने कामों से प्रतिष्ठा मिलती है (नीतिवचन 20:11)।

49. मुझे कठिन समय के दौरान धीरज धरने और बने रहने की योजना बनानी चाहिए (नीतिवचन 24:10)।

50. मुझे सर्वोत्तम परिणामों के लिए सही समय पर काम करने के लिए तैयार रहना चाहिए (नीतिवचन 10:5, नीतिवचन 20:4)।

51. आलस्य जीवन में कई समस्याएँ लाता है, परन्तु मेरा काम अवसर लाता है (नीतिवचन 15:19, नीतिवचन 14:23)।

52. मुझे बेईमानी करके लाभ कमाने का प्रयास नहीं करना चाहिए (नीतिवचन 10:2, नीतिवचन 11:18, नीतिवचन 15:27)।

53. मैं काम करके और बचत करके पैसा कमा सकता हूँ (नीतिवचन 10:4, नीतिवचन 12:11, नीतिवचन 13:11, नीतिवचन 21:20, नीतिवचन 28:19)।

54. यदि मैं धर्मी हूँ, तो परमेश्वर मेरी आवश्यकताएँ पूरी करेगा (नीतिवचन 10:3)।

55. यदि मैं परमेश्वर को दूँ, तो परमेश्वर मेरी धन और सम्पत्ति पर आशीष देगा (नीतिवचन 3:9-10)।

56. मुझे जितनी शीघ्र हो सके दूसरों का कर्ज़ चुका देना चाहिए (नीतिवचन 3:27)।

57. मुझे जरूरतमन्द लोगों के प्रति उदार होना चाहिए (नीतिवचन 11:24-25, नीतिवचन 14:21, नीतिवचन 19:17, नीतिवचन 21:13)।

58. मेरा धन मुझे सुरक्षित नहीं रखता, परन्तु मेरी धार्मिकता मुझे सुरक्षित रखती है (नीतिवचन 2:7-8, नीतिवचन 10:9, नीतिवचन 10:25, नीतिवचन 11:28)।

59. मुझे किसी और के कर्ज़ की जिम्मेदारी नहीं लेनी चाहिए (नीतिवचन 6:1-3, नीतिवचन 17:18)।